

दैनिक भास्कर

12-Aug-2019
झुंझुनूं Page 13

65 वर्षीय रामनिवास जांगड़ का थो। बदमाशों ने राधेश्याम के खाते पहले ही 8 हजार निकाल लिए। सीताराम खाटीवाल मौजूद थे। मानना है कि यातायातकर्मी एक की स्थिति ज्यादा विकट होती है।

सेमिनार • कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों की पुस्तकालय विज्ञान पर राष्ट्रीय सेमिनार में पढ़े गए 40 से ज्यादा शोध पत्र पुस्तकालयों को जिंदा रखना है तो इन्हें डिजिटल बनाना होगा : डॉ. धर्मवीर

भास्कर संवाददाता | झुंझुनूं

दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. धर्मवीर सिंह ने कहा कि पुस्तकालयों को जिंदा रखना है तो इन्हें बदलते जमाने की जरूरत के अनुरूप डिजिटल रूप देना होगा। वरना ये बीते जमाने की बात बन कर रह जाएंगे, क्योंकि आजकल सब कुछ इंटरनेट पर मौजूद है, लोगों की आसान पहुंच है, ऐसे में पुस्तकों को जिंदा रखने तथा उनका महत्व बनाए रखने के लिए इनका रूप बदलने की जरूरत है। वे रविवार को चुड़ैला स्थित जेजेटी विश्वविद्यालय में देश भर से आए कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों का दो दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तकालय



झुंझुनूं. अपनी-अपनी लाइब्रेरी को आधुनिक बनाने का संकल्प लेते प्रदेश भर से आए पुस्तकालयाध्यक्ष।

विज्ञान पर सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। सेमिनार का उद्घाटन विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट बालकिशन टीबड़ेवाल, विशिष्ट अतिथि हरियाणा के कृषि

विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. राजीव कुमार पचेरिया ने दीप जला कर किया। डॉ. धर्मवीर ने पुस्तकालय विज्ञान के संस्थापक डॉ. एसआर रंगनाथन का जिक्र

करते हुए बताया कि गणित के प्रोफेसर होते हुए वे पुस्तकालय का पूरा विज्ञान दुनिया के सामने पेश कर गए। उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान के एजुकेशन, कॅटोलॉगिंग,

स्कॉलर्स को एक ही जगह मिलें तमाम डाटा

सम्मेलन कन्वीनर जयपुर की भारतीय स्कूल डवलपमेंट यूनिवर्सिटी के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. भूपसिंह ने कहा कि आजकल रिसर्च स्कॉलर्स का ज्यादातर समय डाटा कलेक्शन में ही खर्च हो जाता है। उन्हें एक ही जगह तमाम तरह का डाटा मिल जाए तो बहुत ही सुविधा हो जाए, इसके लिए तमाम पुस्तकालयों को डिजिटल बनाने और उन्हें एक दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी पुस्तकालय विज्ञान विभाग के प्राचार्य डॉ. राजकुमार भाकर ने विचार रखे। इस दौरान डॉ. अनिता जैन, सुभाष चंद्र सैनी, डॉ. रोशन चौधरी, श्रद्धा कला, नमिता पारीक, डॉ. मुकेश पाठक सहित स्कॉलर्स मौजूद थे। कुल चार तकनीक सत्रों में 94 से अधिक प्रतिभागियों ने शिरकत करते हुए विचारों और सुझावों का आदान-प्रदान किया। चालीस से ज्यादा शोध पत्र पढ़े गए। डॉ. विजय कुमार, डॉ. शिवा के. शुक्ला ने भी विचार रखे।

क्लासिफिकेशन,

पुस्तकालय

उप पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. नंदिनी खट्टर, डॉ. राजीव कुमार पटेरिया ने पुस्तकालयों के सामने आ रही चुनौतियों एवं उनके समाधान के बारे में बताया।